© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Science and Technology

निराला के काव्य में मानवतावाद

सीतू मिश्रा,
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
हेमवती नन्दन बहुगणा राजकीय महाविद्यालय,
इलाहाबाद, उत्तर प्रेदश, भारत।

शोध अलोख सार– मानवतावाद के दर्शन सर्वप्रथम वेदों और उपनिषदों में होते हैं। श्रीमद्भागवद्, गीता, रामायण और रामचरितमानस मानवतावादी मूल्यों के आधार ग्रंथ कहे जा सकते हैं। जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म मानवतावादी मूल्यों की स्थापना पर विशेष बल देते हैं। बौद्ध धर्म भारत में जन्म एकमात्र विश्व धर्म है। गौतमबुद्ध भाव मानव कल्याण की ही नहीं अपितु सभी जीवों के कल्याण की बात करते हैं। विश्व प्रेम की भावना के कारण उनकी आत्मपरक रचनाओं पर मानवतावाद का प्रभाव है।

मुख्य शब्द–निराला, काव्य, मानवतावाद, साहित्य, भावना, मूल्य।

मानवतावाद के दर्शन सर्वप्रथम वेदों और उपनिषदों में होते हैं। श्रीमद्भागवद्, गीता, रामायण और रामचरितमानस मानवतावादी मूल्यों के आधार ग्रंथ कहे जा सकते हैं। जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म मानवतावादी मूल्यों की स्थापना पर विशेष बल देते हैं। बौद्ध धर्म भारत में जन्म एकमात्र विश्व धर्म है। गौतमबुद्ध भाव मानव कल्याण की ही नहीं अपितु सभी जीवों के कल्याण की बात करते हैं। मनुष्य–मनुष्य के बीच ऊँच एवं नीच का भेदभाव मिटाने का श्रेय बौद्ध धर्म को है। वैष्णव धर्म में भी प्रेम, अहिंसा, करूणा एवं दयालुता पर जोर दिया गया है। भक्तिकाल के अनेक संतों एवं समाज सुधारकों ने मानव के प्रति अन्याय और मानवीयता के हास के विरूद्ध प्राचीन दर्शन का अस्त्र के रूप में प्रयोग कर मानवतावादी मूल्यों की स्थापना की जिसमें रामानन्द, चैतन्य, नानक, नामदेव, कबीर आदि मुख्य हैं।''[1] नानक जी ने 'जाति विहीन तथा वर्गहीन समाज की स्थापना कर मानवतावादी सिद्धांतों की प्रतिष्ठा की।' कबीरदास जी ने जातिगत, कुलगत, संस्कारगत और सम्प्रदायगत भावों को तोड़कर एक ऐसे समाज की स्थापना की जिसमें मनुष्य की एकता और प्रेम का मार्ग ही असल मार्ग था। वे मानव प्रेमी तथा मानवतावादी महा पुरूष थे। जिन्होंने एक ओर तो स्वामी रामानन्द जी के शिष्य होकर भारतीय अद्वैतवाद की कुछ स्थूल बाते ग्रहण कीं और दूसरी ओर योगियों और सूफी फकीरों के संस्कार प्राप्त किए। वैष्णवों से उन्होंने अहिंसावाद और प्रपन्तिवाद लिए। श्री जीवन सिंह ठाकुर का विचार है कि– इंसानी जज़्बे को स्थापित करने की उद्दम लालसा, मानवमात्र की मुक्ति का अप्रतिम आन्दोलन, शोषण मुक्त समाज निर्माण और बन्धनकारी मजहब परस्ती से उपजी दीवारों को तोड़ने का अभियान कबीर का था। ''मानववादी मूल्यों की स्थापना में रामकाव्य परम्परा के प्रवर्तक गोस्वामी तुलसीदास जी का अमूल्य योगदान है। तुलसीदास जी ने राम को आदर्श उपास्य मानकर उन्हें विशुद्ध परोपकारी सिद्ध किया है। परोपकार ही वेदों का सार तत्व है, लोकहत इसी में है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन है कि– ''श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।'' यही भक्ति मानवता की चरम परिणिति है।

मानवता के कारण हेतु तुलसी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष तक को त्यागने की बात करते हैं, क्योंकि इनसे व्यक्तिगत लाभ हो सकता है समष्टिगत लाभ नहीं। डॉ0 रामचन्द्र तिवारी का विचार है कि ''राम'' मानवता के चरम विकसित आध्यात्मिक गुणों की समष्टि हैं, जो पीड़ितों के हित के लिए अवतार लेते हैं। लोक पीड़कों का मूलोच्छेद करने के लिए कटिबद्ध रहते हैं।''[2] जिनका प्रत्येक आचरण नीति युक्त होता है। अतः तुलसीदास जी व्यक्तिगत लाभ का प्रबल विरोध करते हैं तथा समष्टिगत लाभ को सर्वोपरि मानते हैं। वस्तुतः यही मानवतावाद है।

भारतीय दार्शनिकों एवं चिन्तकों ने भी मानवतावादी मूल्यों की स्थापना में अमूल्य योगदान दिया। इस दृष्टि से स्वामी दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर, राजा राममोहन राय, बालगंगाधर तिलक एवं महात्मागांधी का महत्वपूर्ण स्थान है। 'विवेकानन्द का मानवतावाद वेदान्त के इस सार्वभौमिक दर्शन पर आधारित है कि मनुष्य आत्मा है।'

'शान्तोऽयं आत्मा' कहकर उपनिषद आत्मा का वर्णन पूर्ण शक्ति के रूप में करते हैं। इस विश्व शान्ति के लिए मानवतावाद के लिए मनुष्य के मनुष्यत्व को उजागर कर उसके अन्तःकरण में विद्यमान पशुता का विजय प्राप्त करनी होगी। स्वामी रंगनाथनन्द का विचार है कि 'यह ऐसी शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है जो उसके व्यक्तित्व को बौद्धिक स्तर से आध्यात्मिक स्तर तक ले जा सके। ''स्वामी विवेकानन्द इसी को सच्चा धर्म कहकर 'मानव में अन्तर्निहित देवत्व की अभिव्यक्ति के रूप में इसकी परिभाषा करते हैं। बंगला साहित्यकार रवीन्द्रनाथ टैगोर ने मानवतावाद की महत्ता पर बल दिया। महात्मा गांधी का भी मानवतावाद सत्य, अंहिसा और प्रेम की त्रिवेणी के रूप में प्रवाहित है।''[3]

छायावादी समस्त काव्य भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित हैं। इस पर भारतीय सर्वात्मवाद और अद्वैतवाद का गहरा प्रभाव है। मानवीय दृष्टिकोण जो इसकी मूल प्रवृत्ति है, सर्वत्र दृष्टिगत होता है। डॉ0 शिव कुमार शर्मा का मत है कि– 'दर्शन के क्षेत्र में अद्वैतवाद व सर्वात्मवाद, धर्म के क्षेत्र में रूढ़ियों एवं वाह्याचारों से मुक्त व्यापक मानववाद, समाज के क्षेत्र में समन्वयवादी, राजनीतिक क्षेत्र में अर्न्तराष्ट्रीयता एवं शान्ति की नीति, दाम्पत्य जीवन के क्षेत्र में हृदयवाद, साहित्य के क्षेत्र में व्यापक कलावाद या सौन्दर्यवाद, वेदना और अन्तर्मुखीपन एवं व्यक्तिवाद इसकी मूल प्रवृत्तियाँ है।' प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी वर्मा ने इन्हीं प्रवृत्तियों के आधार पर मानवीय एवं सार्वभौमिक मानवतावाद को प्रतिष्ठित किया है।

डॉ0 इन्दर राज बैद का मत है कि– ''मानव की श्रेष्ठता और उसके अद्वितीय शौर्य का वर्णन मात्र ही नहीं मानव जीवन के विविध व्यापारों और राजात्मक सम्बन्धों की सम्यक् व्याख्या भी मानववाद के अन्तर्गत आती है। संस्कृति एवं अतीत के प्रति ममत्व तथा जन्मभूमि और उसके निवासियों के प्रति अपनत्व की भावना में ही राष्ट्रवाद की चरम परिणति होती है। जीव–मात्र के प्रति ममता, सत्य, अंहिसा के आदर्शों के प्रति आस्था और मानवीय समानता की भूमिका पर ही गाँधीवाद का स्तम्भ खड़ा होता है।'[4] डॉ0 शर्मा का कथन है कि– 'व्यक्तिगत सुख–दुःखों की अपने से अन्य सुख–दुःखों की अनुभूति ने ही नये कवियों के भाव प्रवण और कल्पनाशील हृदयों को स्वच्छन्दतावाद की ओर प्रवृत्त किया। स्वच्छन्दतावाद में मानव स्वतंत्रता पर बल है और इसकी मौलिक स्थापना है कि काव्य का स्त्रोत कवि स्वयं ही है कोई दूसरा नहीं। मानवतावाद का सम्बन्ध यथार्थवाद और आदर्शवाद से भी क्योंकि 'यथार्थवादी कला का तात्पर्य है कि जीवन और जगत को यथातथ्य और निष्पक्ष भाव से देखना और उसी प्रकार उनका चित्रण करना। आदर्शवाद में कवि की अपनी भावनाओं का चित्रण जीवन मूल्यों के साथ होता है। यह मानव को आध्यात्मिक बनाता है। तथा 'ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या' अर्थात् ब्रह्मा ही सत्य है जगत मिथ्या है का पक्षपाती है। डॉ0 रामप्रकाश का विचार है कि, ''आदर्शवाद इसी

कारण शाश्वत और नैतिक मूल्यों की विवेचना करता है सच्चाई, ईमानदारी, न्याय, मर्यादा और संयम का अपनाकर जीवन जीने का परामर्श देता है। इस प्रकार यथार्थवाद और आदर्शवाद दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। यथार्थवाद में जब नैतिक आचरण और लोकमंगल का मिश्रण होता है तो आदर्शवाद का जन्म होता है। यही अद्वैतवादी दर्शन का प्राण तत्व है, सर्वात्मवाद है, मानवतावाद है। यही नैतिकता और लोकमंगल हमें मार्क्सवाद में भी दृष्टिगत होता है। मार्क्स ने व्यक्ति की अपेक्षा सामाजिक हित को सर्वोपरि माना। वह अर्थव्यवस्था को महत्व देता है तथा मानव समाज का विकास वर्गहीन और समतावादी समाज से मानता है।''[5] अतः लोकमंगल और समाजवादी दृष्टिकोण के कारण उसे महान मानवतावादी चिन्तक कहा जा सकता है।

छायावादी कवि निराला का मानवतावाद हिन्दी साहित्य को ही नहीं अपितु विश्वसाहित्य को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। पाश्चात्य विद्वान पोप का मत है कि 'मानवता का उचित अध्ययन मानव है। अतः मानववाद का मानव से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। वस्तुतः 'मानववाद' और 'मानवतावाद' दो भिन्न विचारधाराएँ है। 'मानवतावाद' वह सिद्धान्त है जो चिन्तन के क्षेत्र में मानव तथा उसके हित को महत्व देता है। जाति, धर्म, देश, वर्ण आदि से ऊपर उठकर मनुष्य–मनुष्य में समता का भाव जगाता है। पाश्चात्य दार्शनिक 'शिलर ने इसे व्यवहारवाद के अर्थ में प्रयुक्त किया है। मानव के पास विशाल मस्तिष्क एक ऐसी विशेषता है जो उसे अन्य प्राणियों से भिन्न करती है। विद्वानों का मत है कि 'मानवतावादी विचारों का जन्म मानव के शोषण तथा उसके प्रति होने वाले अन्याय के विरूद्ध प्रतिक्रिया में हुआ था। विषमताओं तथा सामजिक अन्यायों से क्षुब्ध होकर मानववाद को अपनाने की यह परम्परा आज भी जीवित है। बच्चन सिंह का मत है कि 'मानववाद की प्रतिष्ठा उस समय हुई जब उसे धर्म, ईश्वर और परलोक से अलग करके इह लौकिकता के धरातल पर उतारा गया। मानववाद एक जीवन दृष्टि है जिसका केन्द्र व्यष्टिगत है। डॉ0 बच्चन सिंह के अनुसार– 'इसके मूल में सकर्मक करुणा निहित है जो लघुमानव की ओर प्रवाहित होती है।' इस प्रकार मानव को अपनी नियति का रचयिता स्वीकारना सम्पूर्ण मानववाद का आधार स्तम्भ है।

मानवतावाद का अर्थ है ऐसा वाद जिसमें संसार के सभी मनुष्यों की मंगलकामना का विधान हो। यह मानवीय करुणा, परोपकार, नैतिकता और अखण्ड आत्मविश्वास पर आधारित है। यह जाति, धर्म, वर्ग, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर लोकहित का पक्षपाती है। पाश्चात्य विद्वान लेकी का मत है कि ''सच्ची मानवतावादी संकल्पना समस्त जीवों के प्रति दया और हित कामना की मूल भावनाओं में निहित है। इस प्रकार पाश्चात्य विचारक मानवतावादी अर्न्तदृष्टि का उत्स मानव और मानवेतर सृष्टि में प्राणि मात्र के प्रति सहानुभूति, करुणा, दया आदि मनोभावों में अर्न्तनिहित मानते हैं। मानवतावादी चिन्तक का केन्द्र समष्टिगत है। इसमें प्राणिमात्र का हित सर्वोपरि है। यह ''वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से प्रेरित है। डॉ0 सत्यदेव मिश्र का मानना है ''मानवतावाद हृदय की संवेदनाओं को जगाकर मनुष्य को सच्च अर्थों में मनुष्य बनने की प्रेरणा प्रदान करता है। मानवतावाद मनुष्य को दानवी–वृत्तियों से बचाता है। और उसमें देवत्व का विकास करता है। अतः मानवतावाद मानव मन में प्राणिमात्र के प्रति प्रेम, सहानुभूति, सुख–दुःख की अनुभूति सद्भाव एवं लोक मंगल की स्थापना है।

यहाँ निराला का नारी के प्रति मानवतावादी दृष्टिकोण है क्योंकि राम की चिन्ता जानकी प्रिया सीता का उद्धार है। ''छायावादी कवियों ने 'मुक्त करो नारी को मानव चिर बन्दिभि नारी को कहकर 'नारी' को सदियों की कारा से मुक्त करने का आह्वान किया है। निराला के राम जीवन को धिक्कारते, विषमताओं का सामना करते हैं किन्तु पूर्णतया निराशा

नहीं होते हैं। कुछ ही क्षणों में एक युक्ति निकालते हैं और अखण्ड आत्मविश्वास से कहते हैं कि अभी एक मन और 'वह रहा एक मन और राम का जो न थका' कहकर राम को एक उपाय सूझता है क्योंकि माता उन्हें 'राजीव नयन' कहती थीं अतः अभी मेरे पास दो नेत्र रूपी कमल शेष हैं। हे माता! मैं एक नयन अर्पित कर इस आराधना को करता हूँ। यहाँ सीता के उद्धार हेतु राम द्वारा अपना एक नेत्र अर्पित कर सिद्धि–प्राप्ति करने का दृढ़ निश्चय मानवीय संवेदना की पराकाष्ठा है।''[6]

निराला का मानवतावाद तोड़ती पत्थर, भिक्षुक, कुकुरमुत्ता, नये पत्ते आदि रचनाओं में देखा जा सकता है। 'तोड़ती पत्थर' कविता के माध्यम से निराला ने उस समाज की भयंकर विषमता पर चोट की है, जिसमें कुछ लोग बड़े–बड़े महलों में आराम से रहते हैं। शोषितों का शोषण करते हैं। और कुछ लोग दिन रात कठोर परिश्रम करके भी दो जून की रोटी नहीं जुटा पाते हैं। इस सामाजिक विषमता को देखकर निराला का हृदय करूणा से भर जाता है, यथा–

वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर
नहीं छायादार

निराला की 'भिक्षुक' कविता अत्यन्त मार्मिक है। जी तोड़ मेहनत करने के बाद भी समाज के शोषितों के शरीर पर वस्त्र नहीं है, भूख से बेहार, क्षुधा–तृप्ति के लिए भोजन नहीं है। खाने के लिए भीख माँगते हैं। भीख भी मिलती नहीं और जूठी पत्तलों को चाटने के लिए विवश है। पर विडम्बना यह है कि वहाँ भी उसे संघर्ष करना पड़ रहा है–

'वह आता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।'

विश्व प्रेम की भावना के कारण उनकी आत्मपरक रचनाओं पर मानवतावाद का प्रभाव है। इस दृष्टि से निराला की 'सरोज–स्मृति' मानवतावाद की आधारशिला कही जा सकती है। इसी प्रकार 'बादल राग' कविता में शोषण एवं अत्याचार के शिकार उस कृषक की दयनीय दशा मार्मिक है जिसके शरीर में मात्र हड्डियाँ ही शेष रह गई हैं–

''जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर।''[7]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. छायावाद, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, प्रा0लि0, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, संस्करण 1995
2. क्रांतिकारी कवि निराला, बच्चन सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण 2003
3. कवि निराला, नंद दुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, संस्करण–2015
4. निराला, परमानंद श्रीवास्तव, साहित्य अकादमी, फिरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली–110001, संस्करण 1974
5. निराला, इन्द्रनाथ मदान, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–1, संस्करण, 2008
6. प्रसाद–निराला–अज्ञेय, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–21100, संस्करण 2014
7. निराला और मुक्तिबोध की चार लम्बी कविताएँ, नंदकिशोर नवल, राजाकृष्ण प्रकाशन, प्रा0लि0, नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण, 1993